# मृत्युञ्जयमन्त्र[1]

अन्धकासुर से युद्ध के दौरान शुक्राचार्य को भगवान् शिव ने निगल लिया था क्योंकि वे मृत असुरों को अपनी मृतसंजीवनी विद्या के प्रयोग से जिन्दा कर देते थे। शुक्राचार्य शम्भु के उदर में सौ वर्षोंतक भ्रमण करते रहे फिर भी भगवान् शिव की जठराग्नि ने उन्हें नहीं जलाया। इसका कारण यह था कि वे शम्भु के उदर में 'मृत्युञ्जय-मन्त्र' का जप कर रहे थे। शम्भु के उदर में शुक्र ने जिस मन्त्र का जप किया था, वह मन्त्र इस प्रकार है-

**'ॐ नमस्ते देवेशाय सुरासुरनमस्कृताय भूतभव्यमहादेवाय हरितपिङ्गललोचनाय बलाय बुद्धिरूपिणे वैयाघ्रवसनच्छदायारणेयाय त्रैलोक्यप्रभवे ईश्वराय हराय हरिनेत्राय युगान्तकरणायानलाय गणेशाय लोकपालाय महाभुजाय महाहस्ताय शूलिने महादंष्ट्रिणे कालाय महेश्वराय अव्ययाय कालरूपिणे नीलग्रीवाय महोदराय गणाध्यक्षाय सर्वात्मने सर्वभावनाय सर्वगाय मृत्युहन्त्रे पारियात्रसुव्रताय ब्रह्मचारिणे वेदान्तगाय तपोऽन्तगाय पशुपतये व्यङ्गाय शूलपाणये वृषकेतवे हरये जटिने शिखण्डिने लकुटिने महायशसे भूतेश्वराय गुहावासिने वीणापणवतालवते अमराय दर्शनीयाय बालसूर्यनिभाय श्मशानवासिने भगवते उमापतये अरिंदमाय भगस्याक्षिपातिने पूष्णो दशननाशनाय क्रूरकर्तकाय पाशहस्ताय प्रलयकालाय उल्कामुखायाग्निकेतवे मुनये दीप्ताय विशाम्पतये उन्नयते जनकाय चतुर्थकाय लोकसत्तमाय वामदेवाय वाग्दाक्षिण्याय वामतो भिक्षवे भिक्षुरूपिणे जटिने स्वयं जटिलाय शक्रहस्तप्रतिस्तम्भकाय वसूनां स्तम्भकाय क्रतवे क्रतुकराय कालाय मेधाविने मधुकराय चलाय वानस्पत्याय वाजसनेतिसमाश्रमपूजिताय जगद्धात्रे जगत्कर्त्रे पुरुषाय शाश्वताय ध्रुवाय धर्माध्यक्षाय त्रिवर्त्मने भूतभावनाय त्रिनेत्राय बहुरूपाय सूर्यायुतसमप्रभाय देवाय सर्वतूर्यनिनादिने सर्वबाधाविमोचनाय बन्धनाय सर्वधारिणे धर्मोत्तमाय पुष्पदन्तायाविभागाय मुखाय सर्वहराय हिरण्यश्रवसे द्वारिणे भीमाय भीमपराक्रमाय ॐ नमो नमः।**

(शिवमहापुराण - रुद्रसंहिता - युद्धखण्ड अध्याय 49/1)

अर्थात्- ॐ जो देवताओं के स्वामी, सुर - असुर द्वारा वन्दित, भूत और भविष्य के महान् देवता, हरे और पीले नेत्रों से युक्त, महाबली, बुद्धिस्वरूप, बाघंबर धारण करनेवाले, अग्निस्वरूप, त्रिलोकी के उत्पत्तिस्थान, ईश्वर, हर, हरिनेत्र, प्रलयकारी, अग्निस्वरूप, गणेश, लोकपाल, महाभुज, महाहस्त, त्रिशूल धारण करनेवाले, बड़ी-बड़ी दाढ़ोंवाले, कालस्वरूप, महेश्वर, अविनाशी, कालरूप, नीलकण्ठ, महोदर, गणाध्यक्ष, सर्वात्मा, सबको उत्पन्न करनेवाले, सर्वव्यापी, मृत्यु को हटानेवाले, पारियात्र पर्वत पर उत्तम व्रत धारण करनेवाले, ब्रह्मचारी, वेदान्तप्रतिपाद्य, तप की अन्तिम सीमातक पहुँचनेवाले, पशुपति, विशिष्ट

---

1. यहाँ पर जिस मन्त्र का वर्णन किया जा रहा है वह 'महामृत्युञ्जय' (वैदिक) मन्त्र से भिन्न है।

अङ्गोंवाले, शूलपाणि, वृषध्वज, पापापहारी, जटाधारी, शिखण्ड धारण करनेवाले, दण्डधारी, महायशस्वी, भूतेश्वर, गुहा में निवास करनेवाले, वीणा और पणव पर ताल लगानेवाले, अमर, दर्शनीय, बालसूर्य – सरीखे रूपवाले, श्मशानवासी, ऐश्वर्यशाली, उमापति, शत्रुदमन, भग के नेत्रों को नष्ट कर देनेवाले, पूषा के दाँतों के विनाशक, क्रूरतापूर्वक संहार करनेवाले, पाशधारी, प्रलयकालरूप, उल्कामुख, अग्निकेतु, मननशील, प्रकाशमान, प्रजापति, ऊपर उठानेवाले, जीवों को उत्पन्न करनेवाले, तुरीयतत्त्वरूप, लोकों में सर्वश्रेष्ठ, वामदेव, वाणी की चतुरतारूप, वाममार्ग में भिक्षुरूप, भिक्षुक, जटाधारी, जटिल – दुराराध्य, इन्द्र के हाथ को स्तम्भित करनेवाले, वसुओं को विजडित कर देनेवाले, यज्ञस्वरूप, यज्ञकर्ता, काल, मेधावी, मधुकर, चलने – फिरनेवाले, वनस्पति का आश्रय लेनेवाले, वाजसन नाम से सम्पूर्ण आश्रमों द्वारा पूजित, जगद्धाता, जगत्कर्ता, सर्वान्तर्यामी, सनातन, ध्रुव, धर्माध्यक्ष, भूः, भुवः, स्वः – इन तीनों लोकों में विचरनेवाले, भूतभावन, त्रिनेत्र, बहुरूप, दस हजार सूर्यों के समान प्रभाशाली, महादेव, सब तरह के बाजे बजानेवाले, सम्पूर्ण बाधाओं से विमुक्त करनेवाले, बन्धनस्वरूप, सबको धारण करनेवाले, उत्तम धर्मरूप, पुष्पदन्त, विभागरहित, मुख्यरूप, सबका हरण करनेवाले, सुवर्ण के समान दीप्त कीर्तिवाले, मुक्ति के द्वारस्वरूप, भीम तथा भीमपराक्रमी हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है।

उपर्युक्त मृत्युञ्जय – मन्त्र मृत्यु का विनाशक और सम्पूर्ण कामनाओं को प्रदान करनेवाला है। अतः इसे प्रयत्नपूर्वक जपना चाहिये।

(उपर्युक्त मन्त्र गीताप्रेस द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त शिवपुराण से लिया गया है।)

❀❀❀❀❀❀

## विद्याप्राप्ति का महत्त्व

विद्या से सुख मिलता है, यश और अतुलित कीर्ति प्राप्त होती है तथा ज्ञान, स्वर्ग और उत्तम मोक्ष मिलता है; अतः विद्या सीखो। विद्या पहले तो दुःख का मूल जान पड़ती हैं, किन्तु पीछे वह बड़ी सुखदायिनी होती है।

**विद्यया प्राप्यते सौख्यं यशः कीर्तिस्तथातुला।**
**ज्ञानं स्वर्गश्च सुमोक्षश्च तस्माद्विद्यां प्रसाधय।**
**पूर्वं सुदुःखमूला तु पश्चाद्विद्या सुखप्रदा।।**

(पद्ममहापु. भूमिखण्ड 122/25-26)